IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

# भारत में महिला सशक्तिकरण एवं योजनाएं : एक अध्ययन

राजेश बोरकर
शोधार्थी अर्थशास्त्र
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय,
जबलपुर (म.प्र.)

डॉ. उमेश कुमार दुबें
प्राध्यापक अर्थशास्त्र विभाग
शासकीय कन्या महाविद्यालय, राझी
जबलपुर (म.प्र.)

**शोध सारांश :–**

यह पत्रा भारत में महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता का विश्लेषण करने का प्रयास करता है और महिला सशक्तिकरण के तरीकों और योजनाओं पर प्रकाश डालता है। सशक्तिकरण सामाजिक विकास की मुख्य प्रक्रिया है, जो महिलाओं को ग्रामीण समुदायों के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सतत विकास में भाग लेने में सक्षम बनाती है। आज महिलाओ ं का सशक्तिकरण 21वीं सदी की सबसे महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक बन गया है, लेकिन व्यावहारिक रूप से महिला सशक्तिकरण अभी भी वास्तविकता का एक भ्रम है। महिलाओं का सशक्तिकरण अनिवार्य रूप से समाज में पारंपरिक रूप से वंचित महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक स्थिति के उत्थान की प्रक्रिया है। हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि कैसे महिलाएं विभिन्न सामाजिक बुराइयों का शिकार बनती हैं। महिला सशक्तिकरण संसाधनों के लिए महिलाओं की क्षमता का विस्तार करने और रणनीतिक जीवन विकल्प बनाने का महत्वपूर्ण साधन है। यह उन्हें सभी प्रकार की हिंसा से बचाने की प्रक्रिया है। यह अध्ययन विशुद्ध रूप से द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। भारत की महिलाएं अपेक्षाकृत अशक्त हैं और सरकार द्वारा किए गए कई प्रयासों के बावजूद वे पुरुषों की तुलना में कुछ कम स्थिति का आनंद लेती हैं। यह पाया गया है कि महिलाओं द्वारा असमान लैंगिक मानदंडों की स्वीकृति अभी भी समाज में प्रचलित है। अध्ययन का निष्कर्ष इस अवलोकन से निकला है कि बुनियादी सुविधाएं प्रदान करना और विभिन्न योजनाओं को लागू करना महिला सशक्तिकरण के लिए सक्षम कारक हैं।

**मुख्य शब्द** – महिला अधिकारिता, बुनियादी अधिकार, शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक–आर्थिक स्थिति, योजना कार्यान्वयन।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची –**

**[1].** अन्नपूर्णा नौटियाल, हिमांशु बौराई। (2009)। 'गढ़वाल हिमालय में महिला सशक्तिकरण, बाधाएँ और संभावनाएँ, कल्पाज प्रकाशन, दिल्ली।

**[2].** ब्रैडी, मार्था (2005). विकासशील विश्व में युवा महिलाओं के लिए सुरक्षित स्थान बनाना और सामाजिक संपत्ति का निर्माण करना खेल के लिए एक नई भूमिका। महिला अध्ययन त्रैमासिक 2005, खंड 33, संख्या 1 और 2

**[3].** क्रिस्टाबेल, पी.जे., (2009)। क्षमता निर्माण के माध्यम से महिला सशक्तिकरण माइक्रोफाइनेंस की भूमिकाश, कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी, नई दिल्ली।

**[4].** दांडीकर, हेमलता.(1986). भारतीय महिला विकास, चार दृष्टिकोण। दक्षिण एशिया बुलेटिन, (1), 2–10। दिल्ली।

**[5].** डॉ. दासरती भुइयां (2006)। भारतीय महिलाओं का सशक्तिकरण, 21वीं सदी की एक चुनौती, उड़ीसा समीक्षा।

**[6].** हैंडी, एफ., और कसम, एम. (2004)। ग्रामीण भारत में महिला सशक्तिकरण. आईएसटीआर सम्मेलन, टोरंटो कनाडा में प्रस्तुत किया गया पेपर।

**[7].** हैरियट बी. प्रेसर, गीता सेन, (2003)। श्महिला सशक्तिकरण और जनसांख्यिकीय प्रक्रियाएंश, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 2, March 2024

**[8].** कबीर, एन. (1995). महिलाओं को निशाना बनाना या संस्थाओं को बदलना? एनजीओ के गरीबी उन्मूलन प्रयासों से नीतिगत सबक। व्यवहार में विकास 5(2), 108–116.

**[9].** कबीर, एन. (2005). लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरणरू तीसरे सहस्राब्दी विकास लक्ष्य का एक महत्वपूर्ण विश्लेषण। लिंग और विकास 13(1), 13–24. 10. कबीर, नैला. (2003)। उलटी वास्तविकताएँरू विकास विचार मे लिंग पदानुक्रम। लंदन, वर्सो, पीपी–69–79, 130–136।